eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

विनम्र गर्वीले चेहरे और नगण्यता के गुणगान का कवि

[1]ऋचा वर्मा
[1]शोध छात्रा, हिंदी विभाग, कला संकाय दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) आगरा

Received: 20 Jan 2023, Accepted: 28 Jan 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2023

Abstract

वीरेन डंगवाल हिन्दी कविता के वैचारिक विमर्श को समझने और समाज में जनपक्षधरता की आवाज़ को बुलन्दी पर ले जाने वाले कवि हैं। उनके समय की कविता को हम समकालीन हिन्दी कविता या आठवें दशक की हिन्दी कविता कहते हैं। वीरेन की कविताएँ अपने दशक में आये विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक बदलावों के समानान्तर एक नई काव्य–दृष्टि का उन्मुक्त उदाहरण हैं। वीरेन की निगाह सामाजिकता और मनुष्यता को गुनने बनने में बहुत स्पष्ट तौर पर देखे जा सकने वाले प्रत्यक्ष अवयवों से लेकर अप्रत्यक्ष अवयवों तक को बहुत साफ पहचानती है। वीरेन की कविता में वर्गशत्रु या अंधेरे की बर्बर ताकतों के समक्ष नगण्य को भी स्थापित करने का जज़्बा है।

बीज–शब्दः– वीरेन डंगवाल, हिन्दी कविता, वैचारिक विमर्श और नई काव्य–दृष्टि।

Introduction

वीरेन कविता के माध्यम से उन विषयों को उठाना चाहते हैं जिन्हें ग़ैर ज़रूरी मान कर भुला दिया जाता है या जिनसे मनुष्यता के खिलाफ़ भरमाने का काम लिया जाता है। गाय, पी.टी. ऊषा, तोप, इन्द्र, मल्लाह, रामसिंह, सभा यह उनकी कविताओं कुछ शीर्षक है और सामयिक मुद्दे भी जिन्हें छोटा मान कर बड़ी बातों से दूर करके देखा जाता रहा है, पर यह विषय के तौर पर कवि की कविता में शामिल हैं और कवि इनके बारे में लिखते हुए गणना न की जाने वाली मनुष्यता अथवा वस्तुओं के बरक्स गहन चिन्तन विश्लेषण की आवाज़ बन जाता है। नगण्य माने जाने वाली श्रृंखला में वीरेन के निकट कुछ भी बदसूरत या कमतर नहीं है, प्रकृति और समाज द्वारा बनाई गई हर चीज को उसके गुणों और मोहकता समझना कलाकार का काम है। हिन्दी कविता की एक परम्परा है, जिसके बारे में मुक्तिबोध कहते हैं कि कविता का उद्देश्य क्या है, 'जो है उससे बेहतर चाहिए/पूरी दुनिया साफ़ करने के लिए मेहतर चाहिए' मेहतर को सम्मान एवं इतनी गरिमा कविता ही दे सकती है, जिसे मुक्तिबोध ने अपने समय में सम्भव किया। वीरेन अपनी कविता में इसी तर्ज पर छोटे–छोटे कारीगर, छोटी–छोटी चीजें शामिल कर कविता का बड़ा संसार निर्मित करते है, जैसा कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'कविता क्या है' निबन्ध में कहा है, एक कवि की आत्मा इतनी विशाल है, कि उसमें छोटी–छोटी चीजों के लिए भी गुंजाइश है। कविता में सिर्फ सुन्दर, भव्य, उदात्त नहीं होना चाहिए। कविता में प्रचण्ड, उग्र, विभत्स जीवन के जो तमाम रूप होते हैं, वो सभी कविता में आने चाहिए। केवल यही नहीं कि आप मधुर सुन्दर शान्त ही लिखें, बल्कि उसके साथ वह सब भी आना चाहिए जो संसार में है। यही वह सब है, जो कविता में वीरेन के यहाँ बहुत ज़्यादा घटित होता है। यह एक बेहद कौतुहलपूर्ण बात है कि हम कई बार बहुत सरल चीजों को सहज होने की वजह से उन्हें नगण्य मान लेते हैं और उन्हें छोड़कर कहीं दूर की कौड़ी पेश करने के लिए संवेदनाओं/भावनाओं के साथ नाइंसाफ़ी कर देते हैं,

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

जबकि संवेदना हमारे बहुत करीब बैठी खुद को छूने, अनुभव करने तक की दूरी पर रहती है और हम किसी अनोखे चमत्कार की खोज में उसे अनदेखा करते जाते हैं। वो उपमान / शब्द जो कि बड़ी सरलता से चीजों को स्पष्ट कर देने वाले हैं वो सरलता हमें वीरेन में देखने को मिलती है और इसके साथ जीवन की ऊहापोह के कई निष्कर्ष भी वे कविता में कहते जाते हैं और पाठक उनसे प्रेरणा पाता जाता है। जिस प्रकार एक अमूर्त पेंटिंग हमें कई सारे अर्थ बताती है उसी तरह वीरेन की कविता कई जगहों पर अमूर्त का ही विस्तार है। मुख्य रूप से जिन कविताओं रचनाओं के ठहरे हुए निष्कर्ष नहीं होते हैं असल में वही ज़्यादा प्रभावित कविताएँ होती है । बचपन में जो कविताएँ हम किताब में पढ़ते थे उन्हें बड़े होकर पुनः पढ़ने में अर्थ और अनुभूति का एक चरण बढ़कर देख पाते हैं। वीरेन की कविताएँ वैसी ही हैं, सहज सम्भावनाओं से भरपूर, जीवन के विवेक को बार–बार खंगालती। जीवन के विवेक की निर्मिती में व्यक्तिमन पर जिन घटनाओं का प्रभाव पड़ता है, कवि उसका चुनाव कविता के लिए बड़ी बारीकी से करता है इसीलिए न सिर्फ कविता लिखना धीरज और विवेक का पर्याय है अपितु उसे पढ़ना भी उतना ही धैर्य एवं संवेदनशीलता की मांग करता है। ग़ौरतलब है वीरेन का एक काव्यांश :–

'जरा सम्हल कर
धीरज से पढ़
बार–बार पढ़
ठहर–ठहर कर
आँख मूंद कर
आँख खोल कर
गल्प नहीं है
कविता है यह' (कविता है यह)

वीरेन कमतरी से घिरे इसी क्षुद्र जीवन के प्रेम के कवि हैं। अपने अभावग्रस्त जीवन में से अपनी बेकार पड़ी गूदड़ चीजों से भी जब कोई व्यक्ति कुछ बेहतर को छाँट लेता है तो उसे अपार खुशी होती है। कवि की पंक्तियाँ हैं–

'गूदड़ कपड़ों का ढेर हूँ मैं
मुझे छाँटो
तुम्हें भी प्यारा लगने लगूंगा मैं एक दिन
उस लालटेन की तरह
जिसकी रोशनी में
मन लगा कर पढ़ रहा है
तुम्हारा बेटा' (कवि–2)

कवि की लालटेन इस चकाचौंध वाली दुनिया में नगण्य है लेकिन उसे कवि ने जिस चीज से जोड़ा है वह सतही प्राकृतिक तौर पर मनुष्य की संवेदना को छू लेने वाला है। 'जरा सोचो, अक्सर वही क्यों जलायी गई बत्तियाँ खूब/जहाँ उनकी सबसे कम ज़रूरत थी' (तारन्ता बाबू से कुछ सवाल) वाले इस समय में 'लालटेन' नगण्य होकर भी जीवन और कविता के लिए ज़रूरी गायन बन जाती

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

है। जीवन के पहले चरण में हम जिसे न देख कर अन्तिम चरण में खोजने, व्याख्यायित करने भागते हैं उसे वीरेन पहले स्तर पर ही बेहद सामान्य पात्रों और उपादानों को लेकर अपनी संवेदना को अभिव्यक्त कर देते हैं। उनकी एक शुरुआती कविता 'कैसी जिन्दगी जिये' में बहुमूल्य जीवन की समाप्ति पर मामूली चश्मे का दु:ख कुछ इसी तरह की काव्य–दृष्टि को उजागर करता है–

'एक दिन चलते–चलते
यों ही ढुलक जायेगी गरदन
सबसे ज्यादा दु:ख
सिर्फ चश्मे को होगा
खो जायेगा उसका चेहरा' (कैसी ज़िंदगी जिये)

कवि अपनी कविता में नगण्य, तुच्छ के पक्ष में है, सामान्य को गौरवान्वित करने के पक्ष में लगातार प्रयासरत है। इस जीवन–दृष्टि को वाचक की काव्य–दृष्टि कैसे आगे बढ़ा रही है ; इसका उत्तर यही है कि वीरेन के सामने जिंदगी के अर्थ बहुत साफ है। कविता के ऊँचे पायदानों पर विराजने के बाद आमतौर पर हाशिए के आदमी को कविता भूल जाती है, लेकिन वीरेन इसे जरूरी तौर पर अपनाते हैं। 'दस हज़ार फ़ीट पर कविता' शीर्षक कविता में जो तस्वीर बनती नज़र आती है, उसे गौर से देखने की जरूरत है, जो श्रम की भी एक कहानी कहती है। जिन रास्तों पर हम दौड़ते, चलते, मारुति उड़ाते फिरते हैं, उन्हें बनाने में न जाने कितने हाथों कन्धों का श्रम लगा होगा। इन रास्तों में उस जन की गाथा है जो श्रम में लगे हैं उनके अपने घर, परिवार बच्चे त्यौहार लोक, खेत और बचपन इस यात्रा में प्रतिदिन साथ रहे हैं।

'किफ़ायत सहित सुप्रबन्ध'
यही है
आधुनिक निर्माण कला का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र
उधर खेल रहे हैं उनके ही जैसे बच्चे
गारे–मिट्टी के खेल
अपनी–अपनी आयु सामर्थ्य और अक्ल के अनुसार
सर पर ईंट जमाती हुई एक नवीना माँ
मन में हुड़कती हुई देखती है रह–रहकर
उस झुंड में घिसटते अपने मुग्ध शिशु को
यह भी पड़ाव है कैसा
मध्य एशिया से चलकर आये अश्वारोहियों का' (ये अश्वारोही)

इन रास्तों, इमारतों को बनाने में कितने प्राण लगे होंगे, इन सब के पीछे बहुत सी कहानियाँ होती हैं जो अपने आपमें बड़ी तो है, लेकिन ताकत वालों की नज़र में महत्वपूर्ण नहीं। इसीलिए उन्हें न गौर से देखा और न सुना जाता है। कविता लेकिन उनके बारे में कहती है। सड़कों के पार चंद रुपये रोज कमाने के लिए अपनी उँगलियों को आठ–आठ घण्टे तक हथौड़ी और पत्थर के नीचे रख देने की इंसानी विवशता को वीरेन ने पहचाना है। इन मज़दूरों पर उनकी काव्य–दृष्टि रुक जाती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

'कृतज्ञता से झुका मेरा माथ
मुँदे नेत्रों कल्पना ने देखे तुम्हारे वे हाथ
कविता के विषय बने जो'
ये हाथ तमाम श्रम के गवाह हैं–
'कहाँ तक पहुँचा दिया हमें साथी
यहाँ तक लाने के लिए
क्या कुछ तो नहीं वारा तुमने
धन्यवाद
'पावन स्मृति में कल्याण सिंह
सुलतान सिंह गजाधर
इसी स्थान पर सड़क बनाते हुए
4 जुलाई सन् 1968 को
बहादुरी से उनकी मौत हुई' (दस हज़ार फ़ीट पर)

जो तस्वीर वीरेन ने खींची है, उसका अनुभव हतप्रभ कर देता है और सहृदय पाठक यहाँ पहुंच कर सुन्न सा पड़ जाता है । कानों में शब्द देर तक गूँजते हैं । मानवता के लिए यह सबसे खतरनाक दौर है। जिसमें श्रम करने वालों को हर दिन जहरीला राष्ट्रवाद निगलता जा रहा है।

'मेहनत'– हाँ जरूरी है
गुज़रा कहाँ इसके बगैर
मगर 'मेहनतकश'– बिल्कुल नहीं
कहीं नहीं शहर में निषिद्ध है यह शब्द' (जो शहर कहीं था ही नहीं)

नागरिकता की पहली शर्त मनुष्य होना नहीं अपितु कुलीनता है, ऐसी सोच को जहरीले राष्ट्रवाद की नीति नकारे या न नकारे पर कविता इसे नकारती है। वीरेन की कविता का नरक्षेत्र व्यापक है जिसे वह 'अपने जन' भी कहते है, जिसने पृथ्वी को धरती/दुनिया/विपुला बनाया है। पहाड़ी लड़का रामसिंह, लकड़हारे भाई, मल्लाह, स्टेशन के फेरीवाले, बर्तन माँजने वाली रज्जो, कटरी की रुकुमिनी, डाकिया ये सभी वह है जो नियोजित विकास की अनेक योजनाओं में लगातार होम हो रहे हैं, जिनकी चिन्ता कवि रात–गाड़ी कविता में करते हैं–

'उधर मेरे अपने लोग
बेघर बेदाना बेपानी बिना काम मेरे लोग
चिंदियों की तरह चले जा रहे हर ठौर
अपने देश की हवा में' (रात–गाड़ी)

यह आंकड़ा जन–विरोधी ताकत वालों के लिए चिंता का विषय नहीं बनता कि ऐसे कितने न जाने कितने लोग हैं जो अपने ही देश में सिर्फ चिंदी की हैसियत रखते हैं। साधनहीन आबादी से सुलभ प्राकृतिक संसाधनों को छीनकर साधन सम्पन्न समुदायों के हाथ में सौंप देने वाली बर्बरता को इस कवि ने पहचाना है और साथ ही यह भी कि तेज विकास की हानि मात्र मनुष्य को ही नहीं पशु–पक्षियों

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

इत्यादि को भी है। कविता पढ़ते हुए कई ऐसे पात्र उनकी कविता में मिलते हैं जो अपना कोई साधारण दर्द या इच्छा जताकर हमें विचलित कर देते हैं–

'घुटनों घुटनों भात हो मालिक
और कमर–कमर तक दाल'
यही है हमारे पहाड़ों के धुनार–शिल्पकारों की
सुखद कल्पना की हद
'घुण्डा–घुण्डा भात ठकुरा अर कमर–कमर तक दाल' (घुटनों घुटनों भात हो मालिक)

पी.टी. ऊषा को देश की बेटी कहकर वीरेन जन बनाम अभिजन को महत्व देते हैं और अभिजात्य को नकारते हैं – 'काली तरुण हिरनी अपनी लम्बी चपल टांगों पर उड़ती है मेरे गरीब देश की बेटी'। वीरेन के यहाँ बीसियों ऐसी कविताएँ हैं जिनमें सत्ता और राजनीति की बर्बरता के सामने मामूली लोगों के प्रयत्न उभारकर रखे गए हैं। गर्वीली गरदनों वाले उन किशोरों को जिनकी ओर खतरों और सम्भावनाओं से भरा हुआ भविष्य उत्सुकता से देख रहा है, वीरेन की विचारधारा वहाँ से गुजरती है और किन्हीं श्रोत्री जी, किन्हीं माथुर सर के द्वारा सिखाए गणित के एक मात्र सूत्र को मनुष्यता के सन्दर्भ में हमेशा याद रखने का प्रण लेती है–

याद रखूंगा मैं अपना सीखा गणित का एकमात्र सूत्र :
'शून्य ही है सबसे ताकतवर संख्या
हालांकि सबसे नगण्य भी'
याद रखूंगा मैं पूरे संसार को ढोने वाली
नगण्यता की विनम्र गर्वीली ताकत
जिसे अभी सही–सही अभिव्यक्त होना है ।' (माथुर साहब को नमस्कार)

वीरेन की कविता के नरेतर क्षेत्र की बात करें तो चूना, कौए, तम्बाकू, जलेबी, पोदीना, नाक, गाय, तोप, सुअर का बच्चा इन विषयों के सन्दर्भ में कवि ने बिल्कुल नयी निगाह की रोशनी में इन्हें अनकही परिभाषा दी है। इन छोटे–छोटे किन्तु परम आवश्यक जीवन सोपान को कविता में जिस प्रकार लाया जाता है, उससे इसका मूल्य बढ़ जाता है साथ ही इन विषयों को चमकाने की और अधिक सम्भावना व्यक्ति मन में हलचल पैदा करती है। 'चूना' कविता में जिस यथार्थ को कवि संजोता है उससे चूना जैसी साधारण चीज़ सशक्त बनने लगती है–

'जहाँ भी पड़ा वहीं पर खिल गया चूना
रोनी दीवार पर आहा क्या जगर–मगर कीन्हा' (चूना)

वीरेन समाज के उस पक्ष को विशेष ध्यान में रखते हैं जो आज की हिन्दी कविता से गायब है। तथाकथित गणमान्य कवि उसे निम्न मानकर विषय के रूप में कविता के लिए जरूरी नहीं मानते। वीरेन के यहाँ इन अनछुए विषयों की विविधता है। पोदीने की बहक, समोसे की सनसनाहट, जलेबी की अकड़ ये छोटी–छोटी चीज हैं, किन्तु इनका तनापन, इनकी मौजूदगी यह मनुष्य के लिए नसीहत मात्र नहीं है, कवि ने अपने परिवेश से ऐसी चीजों को ढूंढ निकाला है जो स्वाभाविक तौर पर उस मूल्य की अभिव्यक्ति करता है, जो इस समाज के लिए हमेशा से बहुत आवश्यक है। 'मक्खी' कविता

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

में दवात में गिरी मक्खी है, जिसे कवि कुछ एहतियात से बाहर निकाल देता है और उसके बारे में कवि का विश्वास है–

'गिरी न होगी
उड़ चली होगी दूसरी मक्खियों के पास
क्योंकि मक्खियाँ नहीं गिरा करती कहीं से
अगर वे जिन्दा हों ।' (मक्खी)

जहाँ समोसे का कारीगर भी अपनी 'कलाकार इतराहट' को महसूस कर सके ऐसी जगह वीरेन उसके लिए कविता और जीवन में बचा कर रखते हैं। इसके अलावा कुछ शहर हैं जो अपनी सांस्कृतिक समझ से परे होकर कविता का हिस्सा बनते हैं जैसे– बरेली, कानपूर, इलाहाबाद, वह वीरेन के यहाँ शहर भर नहीं है बल्कि अपने भरपूर जीवन्त रूप के साथ मौजूद है। स्त्री पर लिखी तमाम कविताओं में संबंधों की कद्र है यहां तक कि खेत–खलियान में काम करती औरतों से भी वह इसी संबंध सूचक भाषा में बात करते हैं–

'गोड़ रहीं माई ओ मउसी ऊ देखौ
आपन–आपन बालू के खेत
कहाँ को बिलाये ओ बेटवा बताओ
सिगरे बस रेत ही रेत
अनवरसीटी हिरानी हे भइया
हेराना सटेसन परयाग
जाने केधर गै ऊ सिविल लैनवा
किन बैरन लगाई ई आग ।' (ऊधो, मोहि ब्रज)

कटरी की रुकुमिनी' में पूरा इलाका जीवन्त हो उठता है तो रुकुमिनी की युवा तोते जैसी आवाज़ 'कभी सिर्फ एक अस्फुट क्षीण कराह' में तबदील होने को कवि भूलता नहीं। सड़कें जब कविता में आती हैं तो वह भी अपने जन के आने का रास्ता बन जाती है। जगह, स्थानीयता, शहर, वस्तुएँ, छोटे–छोटे सामान इन सबका समुच्चय स्थापित करके जब हम इस कवि की कविताओं को पढ़ते हैं तो लगता है कि कोई रंगबिरंगा कोलाज देख रहे हैं। इस कोलाज को यदि थोड़ी स्वच्छन्दता से देखा जाये तो यह सब एक प्रयोजन के किया गया मालूम होता है। कवि अपनी बात कहने के लिए जिन चीजों का चुनाव कर रहा है, उनके बदले में वो कुछ चीजों को छोड़ भी रहा है। इलाहाबाद को चुनने या अन्य को न चुनने के पीछे कवि की विवेक दृष्टि काम कर रही है। इस एक शहर के बारे में कहकर वह अन्य सब शहरों को एक तार से जोड़ देते हैं, साधारण विषयों का ऐसा असाधारण प्रयोग इस कवि की सदृश्य रचना यात्रा है, जिसे कवि ने सचेत तरीके से निर्मित किया है। फ्यूँली जैसा छोटा पहाड़ी फूल उनकी कविता में खिलता है और फूलों की बजाय 'पोदीना' महकता है। इसी पोदीने के माध्यम से वाचक ने देश के अभिजात्य वर्ग की कठोरता और सर्वहारा समाज की बेबसी को उजागर किया है। साधारण चीजों के माध्यम से ही ज़रूरी और सार्थक बातें कवि ने कही हैं जो आज के मध्य वर्गीय जीवन से लगातार गायब होता जा रहा है। उस साधारणता को वीरेन अनेक प्रयोग

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

करते हुए सप्रमाण प्रतिष्ठित करते हैं। समय के साथ–साथ मानवता का ह्रास होते देखना किसी भी सहृदय कवि के लिए अत्यन्त दु:खद होता है। अतः अपनी व्यंजना की कला से पुनः मानवीय मूल्यों को प्रस्थापित करने के लिए कवि की प्रयोगधर्मिता किसी भी छोर पर जीवन धर्मी होने से नहीं चूकती।

सन्दर्भ सूची–

1. डंगवाल, वीरेनः स्याही ताल, पहला सजिल्द संस्करणः 2009, अंतिका प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 82
2. डंगवाल, वीरेनः इसी दुनिया में, दूसरा नवीकृत संस्करणः 2015, नवारुण प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 57
3. डंगवाल, वीरेनः दुश्चक्र में स्रष्टा, दूसरी आवृत्तिः 2015, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 41
4. डंगवाल, वीरेनः इसी दुनिया में, दूसरा नवीकृत संस्करणः 2015, नवारुण प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 11
5. डंगवाल, वीरेनः दुश्चक्र में स्रष्टा, दूसरी आवृत्तिः 2015, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 41
6. डंगवाल, वीरेनः इसी दुनिया में, दूसरा नवीकृत संस्करणः 2015, नवारुण प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 40
7. डंगवाल, वीरेनः दुश्चक्र में स्रष्टा, दूसरी आवृत्तिः 2015, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 69
8. डंगवाल, वीरेनः दुश्चक्र में स्रष्टा, दूसरी आवृत्तिः 2015, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 79
9. डंगवाल, वीरेनः स्याही ताल, पहला सजिल्द संस्करणः 2009, अंतिका प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 63
10. डंगवाल, वीरेनः स्याही ताल, पहला सजिल्द संस्करणः 2009, अंतिका प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 61
11. डंगवाल, वीरेनः दुश्चक्र में स्रष्टा, दूसरी आवृत्तिः 2015, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 77
12. डंगवाल, वीरेनः दुश्चक्र में स्रष्टा, दूसरी आवृत्तिः 2015, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या– 38
13. डंगवाल, वीरेनः इसी दुनिया में, दूसरा नवीकृत संस्करणः 2015, नवारुण प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 65
14. डंगवाल, वीरेनः स्याही ताल, पहला सजिल्द संस्करणः 2009, अंतिका प्रकाशन, ग़ाज़ियाबाद, पृष्ठ संख्या– 72